प्रथम अध्याय

नरेंद्र कोहली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन

“नरेंद्र कोहली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन”

नाटककार के नाटकों का अध्ययन करने से पूर्व उस नाटककार के व्यक्तित्व से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि नाटककार के व्यक्तित्व की छाप उसकी रचनाओं पर तथा पात्रों पर पड़ती है। कोई भी नाटककार अपने परिवेश तथा युग के प्रभाव से नहीं बच सकता। उसके जीवन और व्यक्तित्व का विकास समाज के भीतर रहकर ही होता है। उसके जीवन में आए उतार-चढ़ाव उसकी रचनाओं में प्रतिबिंबित होते हैं। अतः नाटककार की रचनाओं का अध्ययन करने से पहले उनके व्यक्तित्व को जानना आवश्यक होता है।

1.1 व्यक्तित्व का अनुशीलन -

1.1.1 जन्म एवं जन्मस्थान -

नरेंद्र कोहली का जन्म 6 जनवरी, 1940 ई. को स्यालकोट में उनके दादाजी के घर हुआ। इनके दादाजी हरकिशनदास वहीं के निवासी थे और इसी पैतृक मकान में नरेंद्र कोहलीजी का जन्म हुआ।

1.1.2 पारिवारिक स्थिति -

नरेंद्र कोहली की माता विद्यावती स्यालकोट के पास के ही गाँव कौलोकी के किसान परिवार में पली हुई थी। वहाँ स्कूल न होने के कारण वह अनपढ़ रह गई। नरेंद्रजी के पिता का नाम परमानंद कोहली था। उनकी दृष्टि कमज़ोर होने के कारण वे सातवीं-आठवीं कक्षा से आगे पढ़ नहीं सके। इनके दादा हरकिशनदासजी ने उन्हें स्यालकोट में पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की एक दुकान खोलकर दी थी। नरेंद्र कोहली अपने पिता के बारे में लिखते हैं, “वे दुकानदार नहीं साहित्यकार बनना चाहते थे। उन्होंने दो-एक कहानियाँ भी लिखी थी, जो किसी दैनिक समाचारपत्र में प्रकाशित हुई थी, किंतु न वे साहित्यकार बन सके और न दुकानदार।”[1]

नरेंद्र कोहलीजी के पिता ने अंग्रेजों के विरूद्ध किए गए प्रदर्शन से उन्हें जेल हुई, तब दादाजी ने उन्हें जमानत देकर छुड़वाया और अंग्रेज अधिकारी की जान-पहचान से वन-विभाग में क्लर्क की नौकरी दिलवा दी लेकिन उनके अपने दृष्टिदोष एवं कम शिक्षा होने के कारण उनकी

नौकरी न पक्की हुई न पदोन्नति हुई। देश विभाजन के बाद उन्होंने जमशेदपुर में फलों की एक छोटीसी दुकान खोली। सन् 1985 ई. में बयासी वर्ष की अवस्था में उनका देहांत हुआ।

नरेंद्र कोहली के चार भाई और एकमात्र बहन विमला है। नरेंद्रजी से बड़े सोमदेव, सुदर्शन, भूषण ये भाई और बहन विमला हैं। सबसे छोटे भाई रवींद्र हैं और नरेंद्रजी अपने माता-पिता की पाँचवी संतान हैं। नरेंद्र के सोमदेव, सुदर्शन और विमला बहन दादा-दादी के पास स्यालकोट में रहते थे। लाहौर में माता-पिता के साथ नरेंद्र, भूषण और रवींद्र रहते थे।

सोमदेव प्रारंभ में बसों में चेकर हुए फिर किसी दफ्तर में ट्रेसर और फिर उसके बाद इंजीनियर बने। उनके अपने लिखे नाटक उनके दफ्तर में काफी मंचित हुए हैं। बहन विमला कविताएँ लिखती थी। भाई सुदर्शन दिन में पिताजी के साथ फलों की दुकान लगाते और रात को नाईट स्कूल में पढ़ते। बहन विमला कॉलेज में हिंदी साहित्य पढ़ती थी जब कि नरेंद्रजी स्कूल में उर्दू पढ़ते थे। बहन विमला तुलसी, पद्माकर, रत्नाकर, निराला, पंत, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा की कविताएँ अक्सर पढ़कर सुनाती थी। इसी प्रभाव के फलस्वरूप नरेंद्र कोहली ने लेखक बनने का फैसला किया और वे बने भी।

1.1.3 शिक्षा एवं नौकरी -

नरेंद्र कोहली की शिक्षा का आरंभ छह वर्ष की आयु में देवसमाज हाईस्कूल लाहौर में हुआ। इस संदर्भ में वे लिखते हैं- "उस समय बच्चे बाजे-गाजे के साथ स्कूल भेजे जाते थे; पर हम उतने समर्थ नहीं थे। पिताजी मुझे अपने साथ ले गए थे। रास्ते में कहीं से सवा रुपए के लड्डू खरीद लिए थे। लड्डू मास्टर रूड़सिंह के हवाले कर मुझे कक्षा में बैठा दिया गया था।"[2] उस समय लाहौर में शिक्षा का माध्यम उर्दू होने के कारण इनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू से ही हुआ।

नरेंद्र कोहलीजी के पिता को सन् 1946 में नौकरी से मुक्त कर दिया तब परिवार स्यालकोट आ गया। वहाँ नरेंद्रजी को गड़सिंह हाईस्कूल में दाखिल किया गया। देश के बँटवारे के कारण पुनः कोहली परिवार अमृतसर और दिल्ली होते हुए जमशेदपुर पहुँचा। वहाँ चाचाजी के बड़े परिवार के साथ रहते बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। इनकी तीसरी कक्षा की पढ़ाई जमशेदपुर के धतकिडीह लोअर प्राइमरी गर्ल्स स्कूल में हुई। लड़कियों की संख्या कम होने के कारण उस स्कूल में लड़कों को भी दाखिला दिया जाता था। नरेंद्र कोहली का स्कूल का दाखला न

होने के कारण उन्हें तीसरी कक्षा में प्रवेश दिया गया। नरेंद्रजी अपने इस स्कूल के पहले दिन का अनुभव लिखते हैं- ''कक्षा में आने पर दो अध्यापिकाएँ मुझे बाहर मैदान में ले गई। एकांत में उन्होंने पूछा- ''तुम हिंदू हो ?'' ''हाँ'' मैंने उत्तर दिया। ''तो फिर उर्दू क्यों पढ़ते हो ?'' ''हम तो उर्दू ही पढ़ते हैं।'' मेरा उत्तर था। शायद उनके जीवन में पहली बार एक हिंदू लड़का उर्दू की कक्षा में आया था।''[3]

नरेंद्रजी प्राथमिक कक्षा में प्रतिभाशाली होने के कारण प्रथम आते रहे। चौथी से सातवीं कक्षा तक की पढ़ाई न्यू मिड़िल इंग्लिश स्कूल में हुई किंतु अंग्रेजी का केवल अक्षरज्ञान ही हुआ। नरेंद्र की आठवीं से ग्यारहवीं तक की पढ़ाई मिसेज के. एम्. पी. एम्. हाईस्कूल में हुई। छठी कक्षा से वाद-विवाद प्रतियोगिता, कविता एवं कहानी लिखना आरंभ किया। हिंदी-उर्दू की पत्र-पत्रिकाओं के पठन-पाठन से इनकी लेखन प्रवृत्ति बढ़ती गई। नरेंद्रजी छुट्टियों में रामायण और महाभारत का संक्षप्त उर्दू संस्करण पढ़ते रहे। इन्होंने जुलाई, 1957 में उच्च शिक्षा जमशेदपूर को-ऑपरेटिव कॉलेज में हिंदी, अंग्रेजी के साथ मनोविज्ञान तथा तर्कशास्त्र का अध्ययन किया। 1959 में इन्होंने आई. ए. की परीक्षा बिहार विश्वविद्यालय से दी, बी. ए. ऑनर्स के लिए अनिवार्य विषय अंग्रेजी के साथ हिंदी साहित्य और दर्शनशास्त्र का चुनाव किया। 1961 ई. में इन्होंने जमशेदपूर को-ऑपरेटिव कॉलेज से बी. ए. किया और एम्. ए. करने के लिए दिल्ली गए। 1963 ई. में दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज से हिंदी में एम्. ए. करने के पश्चात् 1970 में दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएच्. डी. की उपाधि इन्होंने प्राप्त की।

नरेंद्रजी ने पहली नौकरी 1963 से 1965 तक दिल्ली के पी. जी. डी. वी (सांध्य) कॉलेज में हिंदी के अध्यापक के रूप में की। दूसरी नौकरी मोतीलाल नेहरू कॉलेज, नई दिल्ली में 1965 से आरंभ की जो अब तक चल रही है।

1.1.4 वैवाहिक जीवन –

एम्. ए. के दौरान नरेंद्रजी का एक लड़की से प्रेम का सिलसिला चलता रहा। शादी की नौबत आने पर लड़की ने अपने घरवालों को मनाने की जिम्मेदारी नरेंद्रजी पर सौंपी लेकिन नरेंद्रजी ने इस बात से इन्कार किया और इस प्रकार उनका यह पहला प्रेम शादी में परिणत नहीं हो सका।

नरेंद्र कोहली का एम्. ए. फाइनल में परिचय एम्. ए. प्रीवियस में पढ़नेवाली मधुरिमा से हुआ। दोनों में मेलजोल बढ़ा, दोनों ने एक-दूसरे को समझा, दोनों निकट आए और निकटता में सहज प्रेम विकसित हुआ। मधुरिमा एम्. ए. करने के पश्चात् मॉडर्न कॉलेज में असिस्टंट लैक्चरर की नौकरी करती रही, नरेंद्रजी अध्यापन के दो वर्ष पूरे कर लैक्चरर हो गए थे। अतः 9 अक्तूबर, 1965 को इन दोनों का विवाह हुआ। विवाह के पश्चात् मधुरिमा कोहली ने दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएच्. डी. की। मधुरिमाजी आज कमला नेहरू कॉलेज दिल्ली के हिंदी विभाग में कार्यरत हैं।

मधुरिमाजी से अपने प्रथम परिचय की स्मृतियों के बारें में नरेंद्र कोहली लिखते हैं- ''मधुरिमा को मैं पिछले एक वर्ष से जानता था। वह एम्. ए. प्रीवियस में थी और मैं फाइनल में। दोनों की कक्षाएँ लगे हुए कमरों में होती थी। वह असाधारण सुंदर तो नहीं थी, पर दृष्टि उसके चेहरे पर पड़ती थी तो रूकती भी थी। सुना था पढ़ने में होशियार थी, कभी-कभार पढ़ाई की कोई बात हो जती थी और कभी शरारत भी।''[4]

इसी संदर्भ में मधुरिमाजी लिखती हैं, ''नरेंद्र को तब मैंने उत्तरार्ध के एक मेधावी छात्र के रूप में जाना था। विश्वविद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में नरेंद्र के व्यक्तित्व तथा वक्तृत्वता के आकर्षण से मैं संमोहन की स्थिति तक पहुँच गई थी। वक्तृत्व के बाद परिचय हुआ था नरेंद्र की रचनाओं से। इन रचनाओं के माध्यम से मैंने बिना किसी मुलाकात के ही इन्हें जानने का प्रयत्न किया था। रचनाओं के साथ लगाव का जो संबंध तब जन्मा था, आज वह भरा-पूरा जीवन बन गया है।''[5]

नरेंद्र कोहलीजी और मधुरिमा का विवाह हो गया। 30 नवंबर, 1966 को नरेंद्र और मधुरिमाजी को पहली बेटी संचिता हो गई। जिसका चार महीनों के पश्चात् देहांत हुआ। उससे ठीक एक वर्ष बाद मधुरिमाजी ने जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया, एक लड़का और एक लड़की। दोनों पाँच दिनों तक स्वस्थ रहे लेकिन छटवें दिन दोनों को पीलिया हो गया। अस्पताल में इलाज चलता रहा। इनमें से लड़की सुरभि केवल चौबीस दिनों तक जीवित रही और लड़का कार्तिकेय चालीस दिन के बाद घर लौटा, लेकिन सालभर काफी बीमार रहा। इन दिनों कोहली दांपत्य को काफी दुःख झेलने पड़े। अब कार्तिकेय अर्थशास्त्र में एम्. ए. कर दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज में

लेक्चरर है। 1975 ई. में दूसरे पुत्र अगस्त्य का जन्म हुआ। पहली बार घर में एक स्वस्थ बच्चे के आगमन से वे दोनों खुश हुए। इस संदर्भ में नरेंद्र कोहली लिखते हैं- ''यह पहला बच्चा था जिसका जन्म और पालन-पोषण हमारे लिए बोझ और परेशानी नहीं बना। एक स्वस्थ बच्चे को पालने का सुख हमें उसी ने दिया।''[6]

1.1.5 रहन-सहन, रुचि एवं स्वभाव -

नरेंद्र कोहलीजी ने एक जिम्मेदार पिता, पति, अध्यापक और एक रचनाकार आदि भूमिकाएँ ब-खुबी भिाई है। इन सबका मिला-जुला रूप ही उनका वास्तविक व्यक्तित्व है। फिर भी इन सभी रूपों पर इनका लेखक रूप ही हावी होता है। लेखन ही उनके जीवन का लक्ष्य है, वे केवल लिखते रहना चाहते हैं। महेश दर्पण इनके बारे में लिखते हैं, ''नरेंद्र कोहली यानी धनी श्वेत-श्याम दाढ़ी, ...चश्मे के भीतर से बाहर का सब कुछ समेट लेने को आतुर आँखें.... और मित्रों में बेहद व्यावहारिक और प्रैक्टिकल व्यक्ति के रूप में चर्चित.... यानी घर के भीतर तो एक जिम्मेदार पिता और पति हैं ही, बाहर भी एक बेहतर इंसान और जिम्मेदार सामाजिक के रूप में जाना जाता है यह व्यक्ति.... जो सच पूछे तो नीचे से ऊपर तक साहित्यिक है।''[7]

नरेंद्र कोहलीजी चौथी कक्षा से ही वाद-विवाद तथा भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। सातवीं-आठवीं कक्षा में इन्होंने उर्दू में कहानियाँ लिखनी शुरू की, जो स्कूल की पत्रिकाओं में छपी थी। इनकी बहन कॉलेज में हिंदी साहित्य पढ़ रही थी। वह तुलसी, पद्माकर, रत्नाकर, जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी वर्मा की पंक्तियाँ अक्सर पढ़कर सुनाती थी। उसीसे प्रभावित होकर नरेंद्रजी ने निश्चय किया कि ''मैट्रिक के बाद न तो मैं उर्दू पढ़ूँगा न विज्ञान। मैं तो साहित्य पढ़ूँगा- हिंदी साहित्य में बैरिस्टर बनूँगा, न आई. ए. एस्. अफसर, न इंजीनियर, न डाक्टर। मैं तो बनूँगा लेखक।''[8] और उसी के अनुरूप कोहली जी एक जानेमाने लेखक बन गए हैं।

नरेंद्र कोहली अत्यंत संवेदनशील तथा प्रसन्नचित व्यक्ति हैं। नरेंद्रजी ईमानदार, स्नेहशील व्यक्तित्व उनके लेखक रूप में समाया हुआ दिखाई देता है। नरेंद्रजी के बारे में इनकी पत्नी मधुरिमाजी लिखती हैं- ''बाहर से बेहद हँसमुख, विनोदी और जिंदादिल यह व्यक्ति भीतर से बहुत गंभीर हैं। हर समय हर स्थिति के प्रति अतिरिक्त गंभीरता कभी-कभी दिमाग के लिए बहुत भारी पड़ती है। उसकी आँच में ये स्वयं तो तपते ही हैं, परिवार पर भी उसके ताप की झुलस

पहुँचती ही है।''[9] मधुरिमाजी आगे बताती हैं कि इनके पति, पिता, मित्र, पुत्र आदि विविध रूपों से परिचित होने के बावजूद उनके लिए इन रूपों से बढ़कर सबसे सुखद रूप है 'साथी' का।

निष्कर्ष -

नरेंद्र कोहलीजी के व्यक्तित्व के उपर्युक्त विवेचन से यह कहा जा सकता है कि वे एक सबल व्यक्तित्व के धनी हैं। उनके व्यक्तित्व की झलक देखने पर वे हँसमुख, विनोदी, ईमानदार, संवेदनशील, महत्त्वाकांक्षी, प्रसन्नचित्त तथा जिंदादिल व्यक्ति हैं। वे एक जिम्मेदार पिता, अध्यापक और लेखक हैं। नरेंद्र कोहली में इन सबका मिलाजुला रूप ही असली व्यक्तित्व है। मधुरिमाजी को उनका साथी रूप अच्छा भाता है। नरेंद्रजी ने मैट्रिक के बाद उर्दू अथवा विज्ञान का अध्ययन न कर हिंदी साहित्य पढ़ने और लेखक बनने का फैसला किया। आज वे हिंदी साहित्य के जानेमाने साहित्यकार हैं।

1.2 कृतित्व -

नरेंद्र कोहलीजी के कृतित्व को बारीकी से देखने पर स्पष्ट होता है कि वे बहुमुखी प्रतिभा के मालिक हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य में उनका नाम विविध साहित्यिक विधाओं, कहानी, उपन्यास, नाटककार, व्यंग्य, आत्मपरक, सर्जनात्मक निबंध, बाल साहित्य, शोध, आलोचना आदि से जोड़ा जाता है। उन्होंने विपुल साहित्य का निर्माण करके साहित्यिक के रूप में अपना परिचय हिंदी साहित्य-जगत् को दिया। इन्होंने अपना लेखन कार्य उर्दू से प्रारंभ किया था परंतु कुछ ही समय बाद इन्होंने हिंदी में लेखन कार्य प्रारंभ किया जो इतना प्रबल हो गया कि आज तक हिंदी साहित्य जगत को अनेकानेक रचनाएँ उन्होंने प्रदान की है।

1.2.1 साहित्यारंभ और लेखन प्रक्रिया -

नरेंद्र कोहली बचपन में ही साहित्य में रुचि रखनेवाले, मित्रों से मिलने पर साहित्य के क्षेत्र की ओर आकर्षित हुए। सातवीं-आठवीं कक्षा में कुछ कहानियाँ भी लिखी। आठवीं कक्षा में बाहर पटरी पर फल बेचते हुए एक घटना को देखकर 'हिंदोस्ताँ : जनता निशां :' उर्दू में कहानी लिखी जो स्कूल पत्रिका में छपी थी। इस तरह हाईस्कूल के दिनों से लिखना आरंभ किया। किशोर, आवाज इत्यादी पत्रिकाओं में बाल-साहित्य छपा। इनकी प्रथम प्रकाशित कहानी है 'दो हाथ'। सन् 1960 से इनकी कहानियाँ नियमित रूप से छपने लगी। वे कहानियों के साथ-साथ

व्यंग्य भी लिखते रहें। प्रकाशक दोस्तों की प्रेरणा से उपन्यास लेखन प्रारंभ किया। इन्होंने बेटे की रूग्णावस्था में रामचरितमानस् का पाठ करवाया था अतः राम कथा के प्रसंग इनके मन पर अपनी छाप छोड़ गए। जिससे इन्होंने राम कथा पर लेखन करने का निश्चय किया। उन्होंने महाभारत कथा को भी साहित्य का विषय बनाया। नरेंद्रजी के केवल कहानी या उपन्यास ही नहीं बल्कि नाटक, निबंध, संस्मरण, व्यंग्य, निबंध, बाल साहित्य, शोध आलोचना आदि से इनका रचना-संसार परिपूर्ण बनता गया। अब तक इन्होंने बाइस उपन्यास, आठ कहानी संग्रह, छः नाटक, सात व्यंग्य रचनाएँ, दो बाल-साहित्य, एक निबंध, चार आलोचनात्मक पुस्तकों का सृजन किया है।

नरेंद्र कोहलीजी को लेखकीय संस्कार विरासत में मिले हैं। इस संदर्भ में वे लिखते हैं- ''हमारे परिवार में संयोग की बात है कि मेरे दादा पुस्तकों के बहुत शौकीन थे। यहाँ तक कि जब उनके अँग्रेज अधिकारियों का ट्रान्सफर होता था तो वे उनसे किताबें मांग लेते थे। मेरे पिताजी ने भी पहला काम किताबें बेचने का ही किया- पुस्तकों, पत्रिकाओं की दुकान थी उनकी, लिखने का शौक था उनको। छिटपुट तौर पर कहीं एकाध रचना छपी भी थी उनकी।''[10] इसके अलावा इनके भाई, बहन नाटक, कविता लिखते पर वह अविकसित लेखक ही रहे हैं। नरेंद्रजी महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति हैं और इसलिए वे कहते भी हैं कि ''मुझे भी लिखना है, और लिखना है, अच्छा लिखना है.... दूसरों से आगे बढ़ना है....।''[11] क्योंकि इनके दृष्टिकोण के अनुसारन लिखना, सृजन करते रहना ही इनके जीवन का लक्ष्य है, इनका धर्म है। इनके मतानुसार कलम का थम जाना जड़ता है और कलम का चलते रहना सजीवता की निशानी है। लिखने के लिए उन्हें किसी अन्य नशे की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि लिखना ही उनका नशा है। वे अपनी इच्छा के विरूद्ध लिखना नहीं चाहते। वे वही लिखना चाहते हैं जो उनका विवेक कहता है। वे अपनी किसी भी कृत्य से लेखक के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाना नहीं चाहते क्योंकि उनके लिए 'लेखक' बहुत पवित्र शब्द है, उसे अपमानित करना मानवीय अपराध के समान है।

1.2.2 साहित्य सृजन का उद्देश्य -

नरेंद्र कोहलीजी ने बचपन में ही साहित्य क्षेत्र में कहानी के माध्यम से प्रवेश किया। इन्होंने पहले परिवार, कॉलेज की घटनाओं तथा पात्रों पर आधारित कहानियाँ लिखी। कहानी के साथ-साथ व्यंग्य, उपन्यास, नाटक का भी सृजन किया। इन्होंने व्यक्तिगत जीवन की पीड़ा, मन

के क्षोभ, बच्ची का जन्म और असमय मृत्यु से आए नैराश्य, बेटे की रूग्णावस्था सामाजिक उत्पीड़न तथा घुटन आदि विभिन्न प्रसंगों को साहित्य का विषय चयन बनाया और साहित्य का सृजन किया। नरेंद्र कोहली जी अपनी रचनाओं का सृजन केवल मनोरंजन या धनप्राप्ति के लिए नहीं करते बल्कि वे कहते हैं- ''मैंने तो उपदेशक होना चाहा था, ...इसीलिए तो कि बुरे को बुरा कह सकूँ। अन्याय से लड़ सकूँ, न्याय को बचा सकूँ। कह सकूँ कि अन्याय और अधर्म कहाँ है, अन्यायी और अधर्मी कौन है और मैं उनका विरोधी हूँ, तो फिर मनोरंजन या धनप्राप्ति मेरी रचना का धर्म कैसे हो सकता है।''[12] इनकी रचनाओं का मुख्य धर्म है एक निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ना।

नरेंद्र कोहली साहित्य सृजन का मूल उद्देश्य है पाठकों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराना, संस्कारों के धरातल पर जीवन के विवेक और कर्तव्यबोध से परिचित कराना। नरेंद्रजी ने अपने युग की समस्याओं को उपन्यास, नाटक, कहानी और व्यंग्य द्वारा लोगों तक पहुँचाने का सफल प्रयत्न किया है। साथ ही वर्तमान समाज की विषम परिस्थितियों में लाचार बने मनुष्य की तथा भ्रष्ट राजनीति और आर्थिक शोषण की पोल खोलना, महानगर के बीच फँसे शिक्षित मध्यवर्गीय परिवारों की समस्याएँ और संघर्ष को वाणी देना आदि नरेंद्र कोहलीजी के साहित्य सृजन के मूल उद्देश्य रहे हैं।

1.2.3 उपन्यास -

नरेंद्र कोहलीजी ने बचपन में कविताएँ और कहानियाँ लिखी। आगे चलकर उन्होंने सिर्फ कहानियाँ लिखकर कहानीकार के रूप में ख्याति प्राप्त की और उसी दौरान प्रकाशक मित्रों के प्रभाव से उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त हुए। वे सन् 1972 से उपन्यास लिखते आ रहे हैं। अब तक इनके इक्कीस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

1.	पुनरारंभ	1972
2.	आतंक	1972
3.	पाँच एब्सर्ड उपन्यास	1972
4.	अथितों का विद्रोह	1973
5.	साथ सहा गया दुःख	1974
6.	मेरा अपना संसार	1975

7.	दीक्षा	1975
8.	अवसर	1976
9.	संघर्ष की ओर	1978
10.	अभिज्ञान	1981
11.	आत्मदान	1983
12.	प्रीति-कथा	1986
13.	महासमर- 1 (बंधन)	1988
14.	महासमर - 2 (अधिकार)	1990
15.	महासमर - 3 (कर्म)	1991
16.	अभ्युद्य भाग-1	1992
17.	तोड़ो कारा तोड़ो भाग-1 (निर्माण)	1992
18.	तोड़ो कारा तोड़ो भाग-2 (साधना)	1993
19.	महासमर भाग-4 (धर्म)	1994
20.	अभ्युदय भाग - 2	1994
21.	महासमर - 5 (अंतराल)	1995

1.2.4 कहानी –

नरेंद्र कोहली एक बहुचर्चित कथाकार हैं। साहित्य में इनका आगमन कहानी के माध्यम से हुआ। 1960 ई. में लिखी गई 'दो हाथ' इनकी प्रथम प्रकाशित कहानी मानी जाती है। अब तक इनके दस कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। वे निम्नाकिंत हैं-

1.	परिणति	1969
2.	कहानी का अभाव	1977
3.	दृष्टि देश में एकाएक	1979
4.	शटल	1982
5.	नमक का कैदी	1983
6.	नीचले फ्लैट में	1984

7. नरेंद्र कोहली की कहानियाँ 1984
8. संचित भूख 1984
9. समग्र कहानियाँ भाग - 1 1991
10. समग्र कहानियाँ भाग - 2 1992

नरेंद्र कोहली के मूल आठ कहानी-संग्रह हैं जिनमें कुल 70 कहानियाँ संकलित हैं। यही कहानियाँ समग्र कहानियाँ भाग-1 और भाग-2 में संकलित की गई हैं। समग्र कहानियाँ भाग-1 में 41 और भाग-2 में 29 कहानियाँ संकलित हैं।

1.2.5 नाटक -

नरेंद्र कोहली आज के युग के जाने माने नाटककार हैं। एक नाटककार के लिए आवश्यक तत्वों का स्वरूप उनके रचनाओं में होने से नाटक सफल बने हैं। नरेंद्रजी में एक अच्छे नाटककार के सभी गुण हैं। उनके पास चुस्त भाषा है, सरसवर्णन शैली है तभी तो वे कथ्य के अनुकूल सोद्‌देश्य संवादों की रचना कर लेने में सफल हुए हैं।

नरेंद्र कोहली के कुल मिलाकर छः नाटक प्रकाशित हुए हैं। वे इस प्रकार हैं -

1. शम्बूक की हत्या 1975
2. हत्यारे 1983
3. निर्णय रूका हुआ 1984
4. गारे की दीवार
5. प्रतिद्‌वंद्‌वी
6. नींद आने तक

ये सभी नाटक एक साथ, एक जिल्द में 'नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक' नाम से प्रकाशित हुए हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में इन्हीं नाटकों का विविध दृष्टि से विश्लेषण-विवेचन करने का प्रयास हुआ है।

1.2.6 व्यंग्य -

नरेंद्र कोहली के साहित्य का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि इनकी मूल लेखकीय दृष्टि व्यंग्यात्मक रही है। इनकी व्यंग्य रचनाएँ निम्न लिखित हैं -

1.	एक और लाल तिकोन	1970
2.	पाँच एब्सर्ड उपन्यास	1972
3.	आश्रितों का विद्रोह	1973
4.	जगाने का अपराध	1973
5.	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	1977
6.	आधुनिक लड़की की पीड़ा	1978
7.	त्रासदियाँ	1982
8.	परेशानियाँ	1986
9.	समग्र व्यंग्य	1991

नरेंद्र कोहली जी ने सामाजिक-पारिवारिक संबंधों के परिवर्तन पर व्यंग्य द्वारा प्रहार किया है। शिल्पगत विविधता, प्रभावशीलता एवं पैनी भाषा शैली के कारण इनकी व्यंग्य रचनाएँ सुंदर तथा उल्लेखनीय बन पड़ी हैं।

1.2.7 ***आत्मपरक सर्जनात्मक निबंध -***

1.	नेपथ्य	1983

1.2.8 ***बाल साहित्य -***

1.	गणित का प्रश्न	1978
2.	आसान रास्ता	1984

नरेंद्र कोहलीजी ने बाल साहित्य द्वारा गंभीर चिंतन करके बच्चों के स्वभाव, व्यवहार, उनकी अद्भूत कल्पनाशक्ति, रुचि-अरुचि, इच्छा-अनिच्छा, सहजता, स्वाभाविकता, मासुमियता तथा भावुकता को अत्यंत सहजता से चित्रित किया है।

1.2.9 ***शोध : आलोचना -***

हिंदी साहित्य क्षेत्र में नरेंद्र कोहली अपनी रचनाओं से परिपूर्ण होने पर एक समीक्षक के रूप में भी अपने चार शोध आलोचना द्वारा सामने आते हैं।

1.	प्रेमचंद के साहित्य-सिद्धांत	1966
2.	कुछ प्रसिद्ध कहानियों के विषय में	1967

3. हिंदी उपन्यास : सृजन और सिद्धांत 1977
4. प्रेमचंद 1991

निष्कर्ष -

नरेंद्र कोहली हिंदी के प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं। देश-विभाजन एवं उसकी त्रासदी इनके परिवार को सहनी पड़ी। लाहौर, जमशेदपुर, दिल्ली आदि स्थानों में इन्होंने अपनी प्रारंभिक तथा उच्चशिक्षा प्राप्त की है। पिता की दृष्टि कमजोर होने के कारण ज्यादा पढ़ नहीं सके। इनकी माँ किसान परिवार से संबंधित थी जिसके कारण स्कूल न जाने की वजह से भी हर कक्षा में प्रथम आते रहे। अपनी लगन तथा मेहनत के बल पर वे लेक्चरर बन गए और आगे चलकर एक सफल लेखक के रूप में पहचाने जाने लगे।

नरेंद्र कोहली एक अत्यंत संवेदनशील, प्रसन्नचित, महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। ईमानदारी इनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पहलू रहा है। अपने जीवन से जुड़ी गंभीर और त्रासद परिस्थितियों ने इन्हें व्यंग्य लेखन की ओर प्रवृत्त किया। इन्होंने अपने उपन्यासों में नाटक में समाज में व्याप्त विषमता, जीवनसंघर्ष, अत्याचार, अनाचार, वर्गसंघर्ष, शोषण, भ्रष्टाचार आदि को प्रमुख रूप में वाणी दी है। नरेंद्र जी केवल एक साहित्यकार ही नहीं एक समीक्षक के रूप में सफल सिद्ध हुए हैं।

आधुनिक युग के साहित्यकार होने पर भी नरेंद्र कोहली भारतीय अस्मिता और भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव रखनेवाले लेखक हैं। उन्होंने अपने साहित्य द्वारा स्वतंत्रता के बाद के समाज की बिगड़ती हुई तस्वीर को बड़ी खूबी के साथ प्रस्तुत किया है। राजनीतिज्ञ, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, समाज व्यवस्था, पारिवारिक स्थिति आदि के जाल में जकड़े और विवश आदमी की पीड़ा को साहित्य यथार्थ के धरातल पर खड़ा किया है। इस प्रकार नरेंद्र कोहली एक प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व, एक संवेदनशील, महत्त्वकांक्षी, ईमानदार तथा बहुचर्चित साहित्यकार हैं।

संदर्भ सूची

1. कुछ नरेंद्र कोहली के विषय में, बकलम खुद, पृ. 1
2. वही, पृ. 2
3. वही, पृ. 3
4. वही, पृ. 8
5. संपा. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, नरेंद्र कोहली : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ. 26
6. कुछ नरेंद्र कोहली के विषय में, बकलम खुद, पृ. 11
7. संपा. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, नरेंद्र कोहली : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ. 18
8. कुछ नरेंद्र कोहली के विषय में, बकलम खुद, पृ. 5
9. संपा. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, नरेंद्र कोहली : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ. 28
10. वही, पृ. 19
11. प्रेम जनमेजय, नरेंद्र कोहली : चुनी हुई रचनाएँ, पृ. 574
12. वही, पृ. 575